# साकार सो ही निराकार शिवलिंग बन जाता है।

(सिर्फ प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों के लिए)

**डी.वी.डी. नं.381, वी.सी.डी. नं-2317, प्रातः क्लास- 05.11.66, ता.16.03.2017**

आज का प्रातः क्लास है- 05.11.1966। शनिवार को छठे पेज के मध्य में बात चल रही थी- मैं (निराकार शिव ज्योतिबिंदु सदाशिव) आ करके पतितों को पावन बनाने की युक्ति बताता हूँ। पतितों को पावन बनाता हूँ ना! पहले क्या करता हूँ- पतितों को पावन बनाता हूँ या पहले युक्ति बताता हूँ? पहले युक्ति/तरीका बताता हूँ; क्योंकि पतित-पावन हूँ तो युक्ति तो बताऊँगा ना! मैं आ करके सभी पतितों को पावन बनाने की युक्ति बताता हूँ; परंतु सभी (मनुष्यमात्र) पतित, पावन थोड़े ही बन जावेंगे। 500-700 करोड़ मनुष्य, जो कलियुग-अंत में सब पतित (मूत-पलीती {क्षीण रजवीर्य}) बन जाते हैं, तो क्या सब पावन(-पूज्य) देवता बन जावेंगे? अगर सभी पावन बन जाएँ तो फिर क्या होगा? मान लो, सभी पावन बन जाएँ, तो रिज़ल्ट क्या आवेगा? तो देवताओं की पावन दुनियाँ भी इतनी रचनी पड़े। कितनी बड़ी दुनियाँ? जिसमें 500 करोड़ (हिंदू, मुस्लिम, ईसाई आदि सभी धर्मखंड जो हैं ही) पतित, पावन देवी-देवता बन जावें। भले नंबरवार सही- कोई 16 कला सम्पूर्ण, कोई 14 कला (और कोई 8 कला) सम्पूर्ण। तो बाप (सिद्धानां कपिलोमुनिः {गीता-10/26}) अच्छी तरह से समझाते हैं कि सबको ये बात कहो कि नहीं, सब पतित से पावन देवता नहीं बन सकते। फिर भी 'बाबा-3' ये कह करके सबको परिचय देते रहो। किसका परिचय देते रहो? बाबा का परिचय देते रहो। क्यों नहीं कहा- (बड़ी-ते-बड़ी भौतिकवादी अज्ञानांधकार रूपी महाशिवरात्रि में प्रत्यक्षता में जन्म लेने वाले) शिवबाबा का परिचय देते रहो? अरे! बाबा किसको कहा जाता है? साकार और निराकार के मेल को 'बाबा' कहा जाता है। ''अशरीरी और (बड़ी-ते-बड़ी भोक्तात्मा) शरीरधारी का मिलन है। उनको तुम कहते हो 'बाबा'।'' (मु.ता.29.3.68 पृ.1 मध्य) तो साकार, मनुष्य ही होगा और निराकार, आत्मा (शिव) ही होगी। सारी मनुष्य-सृष्टि का सुप्रीम मनुष्य होगा तो आत्मा (ही, परन्तु सुप्रीम आत्मा नहीं), जो भी मनुष्यमात्र की आत्माएँ हैं, उनका (अर्थात् 5/700 करोड़ साकार मनुष्यों का) सुप्रीम ही होगा ना! (सिर्फ) आत्माओं का सुप्रीम, सुप्रीम बाप (शिव है)। कि कोई दूसरा हो सकता है? दूसरा नहीं हो सकता; क्योंकि ऊँचे-ते-ऊँचे बाप को, जिसका कोई (निराकारी) बाप नहीं है, उसको ऊँचे-ते-ऊँचे में प्रवेश करना पड़े। जो ऊँचे-ते-ऊँचा देवता बनता है। त्रिदेव ऊँचे देवताएँ हैं, उनमें भी देव-2 महादेव, मैं प्रवेश करता हूँ तो 'बाबा' कहा जाता है; क्योंकि साकार मनुष्य भी है और बाबा भी है। तो फिर यहाँ ये तीन बार 'बाबा, बाबा, बाबा' क्यों बोला? दुनियाँ में बाबा किसको कहा जाता है? बूढ़े को भी बाबा कहा जाता है; जैसे- ब्रह्मा बाबा। फिर (उनका भी फादर) ग्रैंड फादर भी बाबा कहा जाता है। शिव ग्रैंड फादर बनता है? वो सिर्फ (निराकारी) आत्माओं का बाप है कि (साकारी संबंध) ग्रैंड फादर है? वो (शिव) तो सिर्फ आत्माओं का बाप है, दूसरा कोई संबंध नहीं। आत्मा-2 आपस में भाई-2, बहन भी नहीं; (आत्मा-2) भाई-2 और उनका एक (गीता 15/1 में) मनुष्य-सृष्टि रूपी वृक्ष अश्वत्थं प्राहुरव्ययं का चैतन्य बीजरूप बाप। वो बाबा नहीं। वो आत्मा वास्तव में जिसका नाम 'शिव' है, किसका नाम? ''मेरी बिंदी का ही नाम 'शिव' है।'' ''उन (शिव) की आत्मा का ही नाम शिव है। वह कब बदलता नहीं।'' (मु॰ता॰24.1.75 पृ॰2 आदि) वो बाबा नहीं है, आत्माओं का सिर्फ बाप है। फिर यहाँ तीन बार बोला- ''बाबा, बाबा, बाबा'' का परिचय देते रहो। तो ये कौन बाबा? मनुष्य-सृष्टि में जिसमें पहले-2 (सन् 1936 में) प्रवेश करते हैं, वो क्या हुआ? बाबा। फिर दूसरा कौन हुआ? जिसके मुख से (सिर्फ) गीता-ज्ञान सुनाया; (गीता ज्ञान-अमृत सागर-मंथन नहीं किया)। ऐसे तो वृद्ध को भी बाबा कहा जाता है ना! उसमें भी निराकार-साकार का मेल था या नहीं? (किसी ने कहा- मेल था) चलो, दुनियाँ का बाबा नहीं; ब्रह्माकुमार-कुमारियों का तो बाबा है कि नहीं है? (किसी ने कहा- है) प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों का भी पहले-2 वो ही बाबा है; क्योंकि जो ब्रह्मा की वाणी सुन करके ब्राह्मण नहीं बनते; पहले क्या चाहिए? (ब्रह्मा की औलाद) ब्राह्मण चाहिए। तो जो ब्राह्मण बनते हैं, ब्रह्मा की वाणी जिसे गीता-ज्ञान कहते हैं, भगवान का सुनाया हुआ गीता-

ज्ञान, उनके लिए भी बेसिक ज्ञान लेते समय दादा लेखराज ब्रह्मा क्या हुआ? बाबा हुआ। फिर तीसरा बाबा? बाबा तो हुआ; लेकिन क्या वो बाबा हुआ जिससे वर्सा मिलता है? अरे! ग्रैंड फादर से क्या मिलता है? (किसी ने कहा- वर्सा) फादर का वर्सा मिले या न मिले; लेकिन ग्रैंड फादर का वर्सा ज़रूर मिलता है।

तो वो राम वाली आत्मा जो अगले जन्म में (सन् 1969 से) आ करके (बेसिक) गीता-ज्ञान सुनती है, ब्रह्मा के मुख से सुनाया हुआ गीता के प्राइमरी स्कूल का गीत कहो या माँ की लोरी का ज्ञान। तो राम वाली आत्मा या उसके जो भी (समझदार) फॉलोअर्स हों, उनका बाबा हुआ या नहीं हुआ? कौन? ब्रह्मा बाबा। फिर तीसरी बार बोला- बाबा। ''बाबा, बाबा और बाबा।'' पहली बार कौन-से ब्रह्मा के लिए बोला? परंब्रह्म के लिए बोला, जो पहले-ते-पहला ब्रह्मा है उसके लिए बोला। दूसरी बार? दादा लेखराज ब्रह्मा के लिए बोला। तो बाबा का तो वर्सा मिलता है ना! परंब्रह्म के द्वारा पहला-2 वर्सा किस(को) मिलता है? परंब्रह्म के द्वारा पहला-2 वर्सा मिलता है (उसको) जो आगे चलकर विश्वपिता बनता है। ब्रह्मा के द्वारा वर्सा किसको मिलता है? ब्रह्मा के द्वारा (शिवपिता वाली राजयोग की) युक्ति बताने का वर्सा मिलता है माना (अपनी आत्मा के अनेक जन्मों के) ज्ञान का वर्सा मिलता है या प्रैक्टिकल में स्वर्ग का वर्सा मिलता है? ज्ञान का वर्सा तो मिलता है ना! सबसे ऊँची चीज़ क्या है? (किसी ने कहा- ज्ञान) गीता में (भी) आया है- ''न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रम् इह विद्यते।'' (गीता 4/38)- इस दुनियाँ में ईश्वरीय ज्ञान के सिवाय दूसरी कुछ भी पवित्र चीज़ नहीं है। तो परंब्रह्म के द्वारा ब्रह्मा को वर्सा मिला, पक्का-2 (निश्चय अर्थात् विश्वसनीय) बुद्धि में बैठ गई कि मैं सतयुग में पहला पत्ता बनने वाला हूँ? ये बात बुद्धि में बैठी या नहीं बैठी? बैठ गई। मुझे वर्सा मिलने वाला है। युक्ति भी मिली। क्या युक्ति मिली होगी? (किसी ने कहा-पहचान) ब्रह्मा बाबा को क्या वर्सा देने वाले बाप की पहचान हुई थी? (किसी ने कहा- नहीं) यज्ञ के आदि में हुई थी? (किसी ने कहा- नहीं) शरीर छोड़ते समय हुई थी? (किसी ने कहा- नहीं) सूक्ष्म शरीर धारण करने के बाद वो युक्ति की बात उनकी बुद्धि में (बाद में) आई कि वर्सा किसका मिलेगा और किससे मिलेगा? (मनुष्य-सृष्टि के बाप) ग्रैंड फादर का वर्सा बाप (विश्वपिता से ही) मिलेगा। वर्सा किससे मिलता है? बाप से। अरे! बाप के पास वर्सा होगा तब ही तो देगा! कौन-सा? बड़े-ते-बड़ा वर्सा क्या है प्रैक्टिकल में? बड़े-ते-बड़ा वर्सा है, जो प्रैक्टिकल स्वर्ग बनता है, उस स्वर्ग में नर से नारायण बनना। वो अव्वल नंबर का वर्सा है। कैसा नारायण- चढ़ती कला का नारायण या उतरती कला का नारायण? (किसी ने कहा- चढ़ती कला का नारायण) सतयुग में पहले पत्ते से लेकर जो भी नारायण होंगे, वो सब उतरती कला के होंगे या चढ़ती कला के होंगे? उतरती कला के होंगे। क्यों उतरते हैं? अरे! कोई कारण होगा ना! (किसी ने कहा- कला कम होती है) क्यों कम होती हैं? (किसी ने कहा- सुख भोगते हैं) भोगी तो दुनियाँ में सभी आत्माएँ हैं। वो क्या अकेले सुख भोगते हैं? (गीता 15/16 में) दो प्रकार की आत्माएँ बताईं- क्षर, अक्षर। अक्षर एक (शिव) है और क्षर सारे ही हैं। क्षर माना क्षरित होने वाले, इन्द्रियों के सुख भोग-2 कर क्षरित/क्षीण होते रहते हैं, आत्मा की शक्ति क्षीण होती रहती है। वो तो सभी हैं। ऐसा भी कोई है जो ज्ञान की युक्ति पा करके, वो जानकारी पा करके, जिस जीवन में पाता है, उस जन्म में क्षरित नहीं होता? (किसी ने कहा- राम या शंकर जगतं पितरं बाप) ''राम बाप को कहा जाता है'' (मु.ता.6.9.70 पृ.3 मध्य), कृष्ण बच्चे को कहा जाता है। ''श्रीकृष्ण बच्चा है'' (मु.ता.7.4.72 पृ.1 मध्य) तो 500-700 करोड़ पत्तों में जो अव्वल नंबर पत्ता (''हे कृष्ण नारायण वासुदेव'') है, उसका जन्म देने वाला बीज राम बाप को कहा जाता है, पहला पत्ता रूपी कृष्ण बच्चे को कहा जाता है। तो जो मनुष्य-सृष्टि में बड़े-ते-बड़ा बाप है, वो एक ही है कि जिस जीवन में उसे वो ज्ञान की युक्ति मिलती है; किससे? कौन-से बाप से? शिव बाप से जो (''राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्'' की) युक्ति मिलती है, उस युक्ति का, उस ज्ञान का पूरा अभ्यास करता है; अंश मात्र भी अधूरा अभ्यास नहीं। माना युक्ति को, ज्ञान को सबसे जास्ती महत्व देता है या नहीं? (किसी ने कहा- देता है) सिर्फ महत्व ही नहीं देता, प्रैक्टिकल जीवन में उस ज्ञान को 100 परसेण्ट अनुभव करके भी देखता है या नहीं? (किसी ने कहा- अनुभव करके देखता है) क्या अनुभव? जो (शिव)बाप कहते हैं- मैं तुम बच्चों को नंबरवार आप समान बनाकर जाता हूँ। ''तुम

बच्चों को भी आप समान अर्थात् निराकारी बनाने, जीते जी मरना सिखलाने आया हूँ।'' (मु.ता.17.2.68 पृ.1 आदि) तो अव्वल नंबर कोई 100 परसेण्ट निराकारी-निर्विकारी-निरहंकारी बनता होगा या नहीं बनता है? बनता है। जो बनता है उस बड़े बच्चे का नाम, बड़ी आत्मा का नाम मनुष्यात्माओं के बीच में; ज्ञान के आधार पर ही बड़े-छोटे होते हैं; उस आत्मा का नाम जो प्रसिद्ध होता है, पूजा जाता है, मान्यता प्राप्त है। जिसकी दुनियाँ में सबसे जास्ती मूर्तियाँ बनी हैं। खुदाइयों में भी वो साकार मूर्तियाँ, वो नग्न मूर्तियाँ सबसे जास्ती तादाद में प्राप्त हुई (हैं)। भले उनका नाम शंकर कहा, तीर्थंकर कहा। वो नाम-रूपधारी एक ही है जिसका नाम 'शिव' के साथ जोड़ा जाता है- शिवशंकर भोलेनाथ। या तो कहते हैं शिव-शंकर भोले-भाले। दो नाम हैं- शिव, शंकर और टाइटिल भी दो हैं- भोले, भाले। कौन भोला? शिव भोला भण्डारी। ऐसे तो कोई नहीं कहता- शंकर भोला भण्डारी। शिव भोला भण्डारी और फिर दूसरा टाइटिल क्या है? भाले। एक काँटा ही कितना बड़ा दुःख देता है। बबूल का काँटा तो हर-2 (बम-बम की नगरी बम्बई) में सबसे जास्ती प्रसिद्ध है, (गायन और पूजन दोनों में ही बबूलनाथ तो है ही; लेकिन बाद में मुम्बई की यादगार मुंबादेवी का यादगार भी असुरसंघारणी के नाम-रूप में ऐसे सहयोगी बन कर प्रसिद्ध हो जाती है)। मुरली में भी क्या बोला? बम्बई के बारे में खास कुछ नहीं बोला? दिल्ली है स्थापनाकारी, बॉम्बे है विनाशकारी। ''देहली का विशेष पार्ट (राजधानी) स्थापना में है और बॉम्बे का विशेष पार्ट विनाश में है।'' (अ॰वा॰26.12.78 पृ॰155 मध्यादि) जैसा नाम वैसा काम। हर-2 बम-2 की वो नगरी है, जहाँ ज्ञान के ऐसे बम-फटाके (होते ही रहते) हैं और अज्ञान की दुनियाँ के भी ऐटम बम्ब (हैं), वो बेहद का बॉम्बे है। जितने भी संसार के बड़े-2 काँटे हैं, बबूल-जैसे काँटे ही क्यों न हों, उनका इस दुनियाँ से खात्मा हो जाता है। उन काँटों का भी बड़े-ते-बड़ा (दुखदायी कहो या विनाशकारी कहो) काँटा बाप कौन हुआ? (किसी ने कहा- शंकर) उसका हथियार- भाला। वो टाइटिल मिला हुआ है। शिव तो प्यार का सागर है। भगवान को कभी भी दुःख का सागर कोई नहीं कहता; परंतु वो जिस तन में आता है, वो निराकारी तो बनता ही है; लेकिन एकदम ऐसा निराकारी नहीं जैसे शिव 5000 वर्ष के लिए निराकारी दुनियाँ (अपने परमधाम) में बैठ जाता है। (गीता 8/21) ऐसा बनता है? ऐसा नहीं बनता। कैसा बनता है? अरे! सुख या दुःख क्या (शिव की) बिंदी आत्मा के द्वारा भोगा जाता है? नहीं, शरीर के द्वारा ही भोगा जाता है। तो वो (शंकर) ऐसा शरीरधारी भी है जो शरीर से ऊँचे-ते-ऊँचा सुख भोगता है और ऊँचे-ते-ऊँची सृष्टि (भी) बनाता है। दुनियाँ में मनुष्य क्या करते हैं? चाहे देवताएँ हों, मनुष्य हों, चाहे राक्षस हों, इन्द्रियों से सुख भोगकर सृष्टि तैयार करते हैं या नहीं? अपनी रचना, परिवार बनाते हैं या नहीं? बनाते हैं। वो (शंकर) सबका बाप है। वो ऐसी सृष्टि रचता है, जिस सृष्टि में सुख (पु. संगम में अतीन्द्रिय सुख) भोगने के बाद जो रिज़ल्ट आता है, वो ऊँचे-ते-ऊँचा (नई सतयुगी 16 कला संपूर्ण दुनिया का) रिज़ल्ट आता है। कैसा ऊँचे-ते-ऊँचा रिज़ल्ट? देवात्माएँ सतयुग में जो सुख भोगती हैं, उससे वो स्वयं भी नीचे गिरती हैं। जिन श्रेष्ठ ज्ञानेन्द्रियों आँखों से सुख भोगती हैं तो कम-से-कम चौथाई कला नीचे गिरती हैं या नहीं? (किसी ने कहा- गिरती हैं) और फिर उनके (पीढ़ी-दर-पीढ़ी) बच्चे/फॉलोअर्स? वो भी (ज़्यादा) नीचे गिरते हैं। लेकिन ये (जगत्पिता शंकर) एक ही आत्मा ऐसी है; कैसी? जो देह की कोई इन्द्रियों से सुख नहीं भोगती। देह विनाशी तो इन्द्रियाँ भी विनाशी और उनका सुख भी विनाशी। वो सिर्फ सम्पन्न शिव समान (अविनाशी अक्षर) आत्मा ही नहीं बनता, सम्पन्न 5 तत्वों का 100 परसेण्ट सात्विक (साररूप) पुतला भी है। कैसा पुतला? 100 परसेण्ट सात्विक पुतला, 5 तत्वों का (जड़त्वमय पत्थर जैसा) शरीर रूपी संघात (अर्थात् लिंगरूप)। तो जो 100 परसेण्ट सत्य होगा, उसका नाश होगा? (किसी ने कहा- नहीं) गीता में ही लिखा हुआ है- ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।'' (गीता 2/16)- सत्य का कभी विनाश ही नहीं होता। अगर 5 तत्वों का कोई 100 परसेण्ट (अविनाशी) सात्विक चोला है तो उसका विनाश होना चाहिए? नहीं होना चाहिए। वो एक ही चोला ऐसा है जो (सदा सत्य का हीरोपार्टधारी होने कारण) विश्व का बादशाह गाया हुआ है। बादशाह बनता है? (किसी ने कहा-बनता है) अच्छा! उसका बाप (शिव) बनता है? (किसी ने कहा- नहीं) तो बाप समान कहाँ हुआ? शिवबाप क्या कहते हैं? मैं तुम बच्चों को आप समान बना कर जाता हूँ। ''तुम बच्चों को

आप समान बनाकर साथ ले जाते हैं।'' (मु.ता.10.9.73 पृ.3 मध्य) तो जब शिवबाप प्रैक्टिकल में विश्व का बादशाह नहीं बनता तो जो बाप समान बनेगा वो प्रैक्टिकल में विश्व का बादशाह बनता है? उसको विश्व की बादशाही का ताज दिखाया जाता है? पार्वती को फिर भी ताज दिखाते हैं, शंकर को कोई ताज नहीं होता। ताज किस बात की निशानी? ज़िम्मेवारी का ताज की निशानी, प्योरिटी का ताज की निशानी। तो वो प्योरिटी का ताज धारण करता है या उसके चित्रों में विष पात्र दिखाया जाता है? सारे संसार की (ग्लानि का कलंकीधर अंतिम महामृत्यु में) विष पीता है- इतना बड़ा विषपायी! विष किसे कहा जाता है? परायी स्त्री और पर पुरुष के सेवन को विष कहा जाता है। जो ऐसा करते हैं वो बड़ी तेजी से नीचे गिरते हैं। वो गिरता है? (किसी ने कहा- नहीं गिरता) अरे! विष पीता नहीं? (किसी ने कहा- पीता है) अरे! पीता भी है, गिरता भी नहीं- ये कैसे? उसकी यादगार एक (ऐसा) वृक्ष दिखाया जाता है, जिसका फल बहुत ऊँचाई पर लगता है। उसका नाम क्या है? नारियल। माना विषपायी तो है, जिनको ये स्थूल आँखें हैं, इन स्थूल देह की आँखों से जो देखते हैं, उनको रियल (विषपायी) दिखाई पड़ता है या नारियल दिखाई पड़ता है? उनको रियल दिखाई पड़ता है; (ना)रियल पार्ट दिखाई नहीं पड़ता।

त्रिमूर्ति के चित्र की व्याख्या पिछले लगभग एक सप्ताह से बाबा मुरली में जानकारी दे रहे हैं। बच्चों से पूछ रहे हैं, बता भी रहे हैं कि त्रिमूर्ति के चित्र में वो चित्र कौन-सा है जो (प्रैक्टिकल) रियल निराकारी पार्ट बजाने वाला है? (किसी ने कहा- शंकर याद में बैठा हुआ) शंकर बुद्धि में घर कर गया; क्योंकि हाथ-पाँव आदि इन्द्रियों वाली मूर्ति है ना और हम भी इन्द्रियों वाले हैं, तो जैसे को तैसा पसंद आ जाता है। बाबा भी मुरली में क्या बोलते हैं? कोई मम्मा के मुरीद, कोई बाबा के मुरीद और (निराकारी बने) शिवबाबा को कोई पूछता ही नहीं। ''अभी तुमको बनना है शिव बाबा का मुरीद। कोई भी देहधारियों का मुरीद नहीं बनना है।'' (मु.ता.18.3.69 पृ.3 अंत) बताओ, त्रिमूर्ति के चित्र में वो कौन-सा शिवबाबा है? शंकर तो खुद ही याद में बैठा है। पुरुषार्थी है या पुरुषार्थ पूरा हो चुका? (किसी ने कहा- पुरुषार्थी है) वो 100 परसेण्ट निराकारी हुआ? (किसी ने कहा- नहीं) अगर 100 परसेण्ट निराकारी होता तो उसको इन्द्रियाँ नहीं दिखानी चाहिए; क्योंकि जो 100 परसेण्ट निराकारी आत्मा बनती है वो इन्द्रियों का सुख(-दुख) नहीं भोगती। शंकर को तो इन्द्रियाँ दिखाई जाती हैं कि नहीं दिखाई जातीं? (किसी ने कहा- दिखाई जाती हैं) चित्र, चरित्र की यादगार है। तो त्रिमूर्ति में बताओ, ऐसा कौन-सा चित्र है जो विचित्र भी है? मंदिरों में दिखाया तो गया है। (सार्वभौम लिंग की) यादगार मंदिर हैं। क्या कर्म कर रहा है? दुनियाँ के लोग जो कर्म करते हैं वही कर्म कर रहा है या कोई दूसरा कर्म कर रहा है? अरे! बताओ? (किसी ने कुछ कहा-...) दूसरा कर्म कर रहा है! दुनियाँ वाला ही कर्म तो कर रहा है। दुनियाँ वालों के जैसा ही कर्म कर रहा है, तो दुनियाँ वालों की तो पूजा नहीं होती। होती है? (किसी ने कहा- नहीं) उसकी पूजा क्यों करते हैं? किसलिए? (किसी ने कहा- अमोघवीर्य है) वो तो दुनियाँ वाले कहते हैं; क्योंकि दुनियाँ वाले देहधारी हैं, इन्द्रियों वाले हैं, तो जो खुद इन्द्रियों वाले हैं, इन्द्रियों का सुख भोगने वाले, वो शंकर के लिए भी कहते हैं- अमोघवीर्य है। अरे! चाहे ज्ञान-इन्द्रियाँ हों, चाहे कर्मेन्द्रियाँ हों, अगर सुख भोगते समय उनसे शक्ति क्षीण नहीं होती है तो उसे अमोघवीर्य कहा जाता है। बराबर ना? कहा जाता है कि नहीं? (किसी ने कहा- नहीं कहा जाता) (किसी ने कहा-अमोघवीर्य माने क्या अर्थ है?) अमोघवीर्य माने (खास कामेन्द्रिय से कर्म करते हुए भी) किसी प्रकार की शक्ति क्षीण न हो। आँखों से सुख भोग रहा हो तो भी शक्ति क्षीण न हो और कर्मेन्द्रियों में भी जो प्रधान कर्मेन्द्रिय है- कामेन्द्रिय, उससे भी सुख भोग रहा हो, कर्म कर रहा हो तो भी शक्ति क्षीण न हो। ऐसा अभी वर्तमान काल में दुनियाँ में कोई मनुष्य नहीं हो सकता, जिसकी कभी भी इन्द्रियों में क्षीणता न आती हो। (किसी ने कुछ कहा-...) अच्छा! शंकर के चित्र देखे हैं? आजकल वो चित्र निकले हैं, पहले नहीं निकले थे, पट पड़ा हुआ है। जैसे पटरानियाँ पट में गिरती हैं। (वास्तव में पट में पड़ा) प्रजापिता पतित का नाम (है)। (कहते हैं कि) शंकर अमोघवीर्य है। मैं कहता हूँ- दुनियाँ में कोई भी मनुष्य अभी अमोघवीर्य नहीं बना है- औरों का ज़्यादा होता होगा, सप्ताह में, दो सप्ताह में, दो दिनों में, चार दिनों में क्षरण होता होगा, उसका कुछ-न-कुछ टाइम नूँधा हुआ है कि जब तक वो याद का पुरुषार्थी है, ऊपर मन-बुद्धि

रूपी आत्मा को ले जाने का पुरुषार्थी (है)। जो गीता में कहा है- ''उद्धरेत् आत्मना आत्मानम् न आत्मानम् अवसादयेत्।'' (गीता 6/5)- ये मन-बुद्धि रूपी जो बिंदु आत्मा है, 'उत्+हरेत', हरण करके जबरियन ऊपर ले जाना चाहिए; मन-बुद्धि रूपी ज्योतिबिंदु आत्मा को नीचे नहीं गिरने देना चाहिए। तो याद में बैठा हुआ है माने बार-2 नीचे गिर रहा है या नहीं गिर रहा है? (किसी ने कहा- गिर रहा है) तो अमोघवीर्य हुआ? (किसी ने कहा- नहीं, इसलिए वो {पुरुषार्थी} शंकर अमोघवीर्य नहीं है।) अब बात पक्की कर लो- नहीं है। (किसी ने कहा- जब महादेव हो जाएगा तब वो....) न वो देवता है इस दुनियाँ में, कोई भी मनुष्य और न कोई शंकर है; क्योंकि चित्र बताते हैं कि उनको इन्द्रियों के घोड़े दिखाए गए हैं, इन्द्रियाँ दिखाई गई हैं। वो इन्द्रियाँ निराकारी स्टेज वाली नहीं बनी हैं। तो शंकर को वो रूप नहीं कहेंगे जिसका परिचय बाबा मुरली में दे रहे हैं। इसलिए शास्त्रकारों ने लिखा है- ब्रह्मा को भी नमन नहीं करता हूँ, गुरू है। गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परंब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।। उस ऊँचे-ते-ऊँचे भगवंत को मैं नमन करता हूँ। शंकर को तो इन्द्रियाँ दिखाई जाती हैं, इन्द्रियों में बंधायमान दिखाया जाता है। जो इन्द्रियों में बंधायमान है वो निराकारी बनने का पुरुषार्थ करेगा ना! सम्पूर्ण निराकारी बन जाएगा तो उसको इन्द्रियों की स्मृति आएगी? बिल्कुल नहीं आएगी। इसी आत्मिक स्टेज को गीता (9/4) में लिंगरूप 'अव्यक्तमूर्तिना' बताया है।

त्रिमूर्ति के चित्र की 6-7 दिनों से व्याख्या हो रही है मुरली में। बाबा बता रहे हैं, त्रिमूर्ति के चित्र में समझाय भी रहे हैं- ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत कौन है? बच्चे गफलत में आ जाते हैं। क्या गफलत? कोई मम्मा के मुरीद, कोई बाबा के मुरीद। ब्रह्माकुमारियाँ कहती हैं- ब्रह्मा बाबा कभी भी क्षरित नहीं होते थे। अरे! क्षरित नहीं होते थे तो इन्द्रिय जीते जगतजीत बन गए क्या? नहीं बने ना! तो फिर बताया कि वो स्वरूप कौन-सा है जो दुनियाँ में सार्वभौम है, सारी दुनियाँ में उसकी यादगार मिल रही है, मंदिर भी बने हुए हैं, (लिंग-)मूर्तियाँ भी मिल रही हैं। तो बुद्धि देहधारी ब्रह्मा-विष्णु-शंकर की तरफ चली जाती है। अरे! ये सूक्ष्म शरीरधारी हैं या नहीं हैं? (किसी ने कहा- हैं) सूक्ष्म शरीर भी तो शरीर ही है ना! ज्योतिबिन्दु आत्मा शरीर नहीं है। सूक्ष्म शरीर तो शरीरधारी ही है। सूक्ष्म शरीर ज़्यादा पावरफुल होता है कि स्थूल शरीर ज़्यादा पावरफुल होता है? सूक्ष्म शरीर ज़्यादा पावरफुल होता है। तो जो ज़्यादा पावरफुल होगा, उसमें ज़्यादा संकल्प शक्ति होगी, वाचा की शक्ति होगी, कर्मेन्द्रियों की शक्ति होगी कि स्थूल शरीरधारियों में होगी? (किसी ने कहा- सूक्ष्म शरीर में) देखो, कोई में भूत प्रवेश करता है तो जिसमें प्रवेश करता है वो लुंजुम-पुंजुम होता है और जब भूत प्रवेश करता है तो उसमें कई गुनी ताकत आ जाती है। कहाँ से आती है? सूक्ष्म शरीर से आती है। बाबा तो बताय रहे हैं, कितने साल से बताते चले आ रहे हैं, ब्रह्माकुमार-कुमारियों को भी बताते चले आ रहे हैं। वो भी फॉलो तो करती हैं बच्चा-बुद्धि से। बाबा कहते हैं- सबसे पहले ऊँचे-ते-ऊँचे भगवंत का परिचय दो। इधर-उधर की बातें करते रहते हैं। चारों चित्र समझाते रहते हैं। बाबा कहते हैं- ''अल्फ को ही नहीं समझा है तो फट से रवाना कर दो। बोलो- जब तक बाप को न जाना है तब तक तुम्हारी बुद्धि में कुछ बैठेगा नहीं।... अल्फ को न समझा है तो धूर भी नहीं बैठेगा।'' (मु.ता. 25.3.68 पृ.2 मध्यांत) क्यों? क्योंकि वो हमारे कुल का है ही नहीं, ऊँचे-ते-ऊँचे भगवंत ने जो प्रैक्टिकल में सृष्टि रची है, उस कुल का नहीं है। इसलिए भगाय देना चाहिए। कहे कि हमारी बुद्धि में बैठा है, निश्चय-पत्र लिखकर दे, तो मान लेना चाहिए; भले झूठा देता हो। जैसे आजकल बहुत निकलेंगे, डायरैक्शन निकला कड़क, डायरैक्शन तो पहले से भी मुरली में था- ''हंस और बगुले इकट्ठे रह न सके।'' (मु.ता.19.11.72 पृ.1 आदि) लेकिन स्टाम्प पेपर पर लिख-2 कर दे रहे हैं कि हम बगुले नहीं बनते हैं, हम किसी भी प्रकार से विकारी के संग के रंग में नहीं रहते हैं और विकारियों के हाथ का भोजन नहीं खाते हैं; लेकिन फिर भी क्या होता है? कोई-2 खाते हैं या नहीं खाते हैं? लिखकर दे देंगे और आते रहेंगे। नहीं समझते हैं कि ये ऊँचे-से-ऊँची राजधानी स्थापन हो रही है। राजधानी माने संगठन; राजाओं की धारणा शक्ति का संगठन। इसलिए झूठे-2 भी लिखकर दे देते हैं। उनका बाद में क्या अंजाम होगा!

तो बताया, बात चल रही थी कि सबको बाबा का परिचय देते रहो। जिसको सर्वव्यापी का ज्ञान भरा हुआ है। दुनियाँ

से जो भी आते हैं, उनकी बुद्धि में कौन-सा ज्ञान भरा हुआ है? भगवान सर्वव्यापी है और यहाँ ब्राह्मणों की दुनियाँ में शूटिंग होती है। तो कोई ग्रुप ब्राह्मणों का होगा ना, जो ये साबित करने वाला हो कि भगवान एकव्यापी नहीं है, सर्वव्यापी है। ऐसा ब्राह्मणों की दुनियाँ में कोई ग्रुप/संगठन है? (किसी ने कहा- है) कौन? (किसी ने कहा- बेसिक वाले) हाँ, ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ कहते हैं कि एकव्यापी नहीं है, वो दीदी-दादियों-दादाओं में भी व्यापक है। इसलिए श्रीमत का मतलब ये नहीं है- ऊँच-ते-ऊँच की मत, ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत की मत। उसे पहचानो या न पहचानो। न हम पहचानते हैं; लेकिन जो भी गुरू गद्दी पर बैठते हैं, वो सब हमारे भगवान हैं। भक्तिमार्ग में क्या करते हैं? अरे! जो गुरू गद्दी पर बैठा; एक गुरू ब्रह्मा गुरू मर गया, कुमारिका दादी गद्दी पर बैठी। बस! उसी की मत पर चल पड़ते हैं। बाप तो कहते हैं- एक सद्गुरू निराकार। कौन? एक सद्गुरू, सच्चा गुरू भी है और निराकार भी है। अरे! गुरू दलाल होता है या नहीं? ''सुंदर मेला कर दिया जब सद्गुरू मिला दलाल।'' (मु.ता. 10.7.72 पृ.3 मध्य) दलाल साकार होता है या निराकार? साकार होता है। माने वो सद्गुरू भी है, साकार भी है और निराकारी स्टेज भी धारण कर लेता है। जो निराकारी स्टेज धारण कर लेता है, उसकी मंदिरों में पूजा होती है, सबसे ज़्यादा पूजा, सबसे ऊँची मान्यता। शिव के पुराने मंदिरों में देखें, (दैवी परिवार का) मुखिया शिवलिंग बीच में बैठा है और आस-पास चारों तरफ़ देवी-देवताएँ बैठे हैं। उन देवी-देवताओं के बीच में मुख्य स्थान पर महादेव शंकर को बैठा दिखाया जाता है। ऐसे ही है ना! तो सब जो चारों ओर बैठे हैं, उनकी नज़र किसके ऊपर है? (किसी ने कहा- महादेव के ऊपर) महादेव के ऊपर नज़र है? जो शिवलिंग बीच में रखा हुआ है उसके ऊपर नज़र नहीं है? (किसी ने कहा- मुखिया...) हाँ, मुखिया के ऊपर सबकी नज़र है। एक शिवबाबा, दूसरा न कोई।

तो वो बाबा इशारा दे रहे हैं कि वो कौन है त्रिमूर्ति के चित्र में? भल ब्रह्माकुमारियाँ भी बाबा के डायरैक्शन को फॉलो करती रहीं, जो बाबा ने कहा- पहले बाप का परिचय दो। ''पहले-2 तो परिचय देना है बाप का।'' (मु.ता.5.11.71 पृ.1 अंत) लेकिन वो स्वयं बाप को जानतीं नहीं। तो क्या करती हैं? वो ही 32 किरणों वाला चित्र और वो ही निराकार ज्योतिबिंदु। वो समझते ही नहीं कि गुण और अवगुणों का भण्डार साकार होता है या निराकार होता है? (किसी ने कहा- साकार होता है) वो निराकार अगुण है या सगुण है? वो तो अगुण/निर्गुण है- उसमें ना अच्छा गुण है और ना बुरा गुण है। तो वो कौन है, जिसके लिए मुरली में बोला है- ''स्वर्ग की दुनियाँ मेरी है तो नर्क की दुनियाँ मेरी नहीं है क्या?'' ''बाप की ही सारी दुनियाँ है, नई वा पुरानी। नई बाप की है, तो पुरानी नहीं है क्या? बाप ही सभी को पावन बनाते हैं। पुरानी दुनियाँ भी मेरी ही है। सारी दुनियाँ का मालिक मैं ही हूँ। भल मैं नई दुनियाँ में राज्य नहीं करता हूँ; परंतु है तो मेरी ना।'' (मु.ता. 14.6.68 पृ.1 आदि) वो (शिवबाबा) स्वर्ग की दुनियाँ का भी बाप है, रचयिता है और नर्क की दुनियाँ का भी रचयिता बाप है। दोनों प्रकार की दुनियाँ के ऊपर उसका आधिपत्य है। वो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत है। ऊँचे-ते-ऊँचा और नीचे-ते-नीचा- ये टाइटिल निराकारी दुनियाँ का है या साकारी दुनियाँ का है? साकारी दुनियाँ का है। तो साकारी दुनियाँ में कोई साकार होना चाहिए, जो शिव की तरह आत्मिक/निराकारी स्टेज में टिक जाए। पुरुषार्थ सम्पन्न होने के बाद की बात है, शंकर की बात नहीं है। दुनियाँ ने तो शिव-शंकर को मिलाकर एक कर दिया। वो तो अज्ञानी हैं। हम भी एक कर दें? शिव (निराकार) अलग है और शंकर (साकार) अलग है। दोनों में कितना फर्क है! नाम के अर्थ में कितना फर्क है! रूप में कितना फर्क है और गुणों में कितना फर्क है! वो सारे संसार का कल्याण कर देता है। कौन? शिव। सभी 500 करोड़ मनुष्यात्माओं (में), यह संसार रूपी सृष्टि जो है, उसमें कौन सर्वोपरि सत्य है, उसका परिचय देता है। किसका परिचय? इस समूची सृष्टि में, प्राणियों की जो सृष्टि है, उसमें सर्वोपरि सत्य कौन है जो झाड़ के चित्र के ऊपर बैठा हुआ दिखाया गया है? जहाँ से हो करके सारी मनुष्यात्माएँ दिखाई गई हैं, वहाँ से हो करके निराकारी धाम में पहुँचती हैं। और बाप कहते हैं निराकारी धाम को तुम इस सृष्टि पर उतार लेते हो। ''थोड़े ही दिन इस दुनिया में हो, फिर तुम बच्चों को यह स्थूलवतन भासेगा ही नहीं, सूक्ष्मवतन और मूलवतन ही भासेगा।'' (मु॰ता॰ 7.3.67 पृ॰2 अंत) तो वो कौन-सी जगह है, कौन-सा स्थान है, कौन-

सा व्यक्तित्व है जिसमें वो निराकारी आत्माओं की दुनियाँ उतर आती है? जिसके लिए गीता में बोला है- ''मेरी अव्यक्त-मूर्ति के द्वारा सारी दुनियाँ व्याप्त है;'' (गीता 8/22) लेकिन अर्थ नहीं समझा। जैसे बीज सारे पत्तों में, टहनियों में, फलों में, फूलों में व्याप्त होता है या नहीं व्याप्त होता है? (किसी ने कहा- होता है) बीज व्याप्त होता है कि उसकी शक्ति व्याप्त होती है? (किसी ने कहा-शक्ति व्याप्त होती है) इसलिए गीता में कहा है- ''नाहं तेषु ते मयि।'' (गीता 7/12)- मैं उनमें नहीं हूँ; लेकिन वो सब मेरे में हैं। तो झाड़ के ऊपर जो नंग-धड़ंग बैठा हुआ दिखाया गया है, उसे देह की स्मृति नहीं, ये दिखाने के लिए नंगा दिखाया है। वो कहता है- 'मन्मना भव'; मेरे मन में समा जा। शिव ज्योतिबिंदु नहीं कहता है कि मेरे मन में समा जा। उसको मन है? नहीं है। वो कैसे कहेगा- मेरे मन में समा जा? वो तो अमन है। वो कभी सोच-विचार करता ही नहीं। वो सोचता है या असोचता है? वो तो असोचता है, उसे सोचने की दरकार ही नहीं। वो तो जन्म-मरण के चक्र में भी नहीं आता है। वो तो ऑलरेडी त्रिकालदर्शी है, उसे अपने बारे में सोचने की क्या दरकार! तो वो जिसमें प्रवेश करता है, वो मन वाला है, मनुष्य है, मनुष्य-सृष्टि का बाप है। उस मनुष्य तन के द्वारा बोलते हैं- मन्मना भव। तो बोलने वाली आत्मा कौन है? परंब्रह्म है। सबके मन में अलग-2 संकल्प चलता है या एक ही संकल्प चलता है? अलग-2 संकल्प चलता है। तुंडे-2 मतिर्भिन्ना। तो सबके अंदर जो भी भिन्न-2 प्रकार के संकल्प चलते हैं, उनसे बोला- मेरे मन में समा जा। मेरे मन में क्या है? एक शिवबाबा, दूसरा ना कोई। माना वो किसको शिवबाबा कहता है? अरे! वो परंब्रह्म शिवबाबा किसको कहता है, इसका मुरली में कोई जवाब है? क्या जवाब है? ''तुम शिवबाबा कहते हो तो बुद्धि निराकार तरफ ही चली जाती है। निराकार ही याद आता है।'' (मु.ता. 4.7.76 पृ.1 मध्य) हाँ! तू अकेला ही है जिसकी बुद्धि में बाबा कहने से कौन याद आवेगा? शिव ही याद आवेगा, बिंदी ही याद आवेगी। तेरे लिए बिंदी ही बाबा है। और सबके लिए बिंदी, बाबा नहीं है, स्पेशल तेरे लिए वो बिंदी, जिसका नाम 'शिव' है, वो बाबा है। किस आधार पर? क्योंकि तेरे (शंकर) को वो बड़े-ते-बड़ा ज्ञान का वर्सा मिलता है। किससे? जो ज्ञान का (अखूट) भण्डार है। कैसा भण्डार? अखूट भण्डार। सारा ज्ञान का भण्डार वो निकाल लेता है तो भी सम्पूर्ण बचता है, खूटता ही नहीं। कौन निकाल लेता है? परंब्रह्म।

तो बोला- जैसे परिवार बनता है। शिव भगवान भी इस सृष्टि को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' बनाने आया है। तो पहली-2 रचना किसको बनाता है? परंब्रह्म को बनाता है। जिसको रचना बनाता है उस पर आशिक होकर आता है कि माशूक बनकर आता है? (किसी ने कहा- आशिक बनकर) माशूक बनकर क्यों नहीं? अरे! (परमधाम से शिव) आशिक बनकर इसलिए आता है कि दुनियाँ में जितने मनुष्य होते हैं 'पुरुष', वो पुरुष ही आशिक बनते हैं; क्योंकि सब पुरुष दुर्योधन-दुःशासन हैं, ज़बरदस्ती कब्जा करना चाहते हैं। सहज हो जाए तो अच्छा; नहीं हो जाए तो पीछे पड़ जाते हैं। तो आशिक हुए ना! तो भगवान किसके ऊपर आशिक होकर आता है? परंब्रह्मा। मैं जिसमें प्रवेश करता हूँ उसका नाम 'ब्रह्मा' रखता हूँ। ''अगर दूसरे में आवे तभी भी उनका नाम 'ब्रह्मा' रखना पड़े।'' (मु.ता.17.3.73 पृ.2 अंत) तो सवाल ये था- वो ही पहला-2 आशिक क्यों बनता है? जो गाया जाता है, गीता में भी है- ''मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।'' (गीता 3/23)- मैं जो पार्ट बजाता हूँ, सारी दुनियाँ के सब मनुष्य वो ही पार्ट बजाते हैं। पुरुष क्या पार्ट बजाते हैं- आशिक का या माशूक का? आशिक का पार्ट बजाते हैं। तो वो आशिक बड़े-ते-बड़ा है। किसका? शिवबाबा का। शिवबाप का नहीं, वो तो खुद ही है। किसका बड़े-ते-बड़ा और पहले-ते-पहला आशिक है? शिवबाबा का। सवाल था- वो ही क्यों है? अरे! जवाब होगा कि नहीं? वो इसलिए है कि वो ही परमपुरुष है। सब पुरुष दुर्योधन-दुःशासन तो हैं, आशिक बनते हैं, पीछे पड़ जाते हैं; लेकिन वो कैसा पुरुष है? परमपुरुष, उससे ऊँचा, उससे परे कोई भी पुरुष माने आत्मा नहीं है। 'पुरु' माने शरीर रूपी पुरी और 'श' माने शयन करने वाला; शरीर रूपी पुरी में आनंद करने वाला। वो इस सृष्टि पर आता है, पतित तन में आता है तो भी दुःखी/परेशान होता है क्या? दूसरों को परेशान करता है? नहीं। आराम से रहता है ना! तो परमपुरुष हुआ ना! तो परमपुरुष है माना बड़े-ते-बड़ा पुरुष माने बड़े-ते-बड़ा क्या है? पीछे पड़ने वाला। किसके? माशूक के। तो जिस माशूक के पीछे पड़ता है, उसको कब्जे में कर लेता है? पति का काम क्या है? तन-

मन-धन सब कब्जे में कर लें। तो कब्जे में कर लेता है, तो जिसको कब्जे में किया, उसको अपनी सारी सम्पत्ति पहले-2 सौंपता है या नहीं सौंपता है? अरे! परिवार/कुटुम्ब में सच्चा पिता कौन होता है? सच्चा पति कौन होता है? जो अपने धन की, अपनी कमाई हुई प्रॉपर्टी की सारी जानकारी किसको दे? पत्नी को दे। तब पक्का प्रवृत्तिमार्ग वाला हुआ। पक्का पति है, रक्षक है; क्योंकि अपनी सारी प्रॉपर्टी परिवार का पोषण करने के लिए पहले-2 किसको सौंपता है? परंब्रह्म को, माता को सौंपता है। तो माता के अंदर उसकी जितनी भी निराकार आत्माओं के बाप की प्रॉपर्टी है; उसकी क्या प्रॉपर्टी है? ज्ञान। निराकार से निराकारी ही वर्सा है ना! वो ही प्रॉपर्टी है ना! तो सारी प्रॉपर्टी पहले-2 किसको देता है? माता को देता है। वो 100 परसेण्ट सच्चा पति है। सारी पावर परिवार का पोषण करने के लिए, जन्म देने के लिए माता को देता है। तो ऐसे ही है, शिवबाप आते हैं तो परंब्रह्म को पवित्रता की सारी पावर सौंपते हैं या नहीं सौंपते हैं? सारी शक्ति/ऊर्जा सौंप देते हैं। फिर माँ क्या करती है? (किसी ने कहा- बच्चों को देती है) हाँ, अपने जो नंबरवार बच्चे हैं। बच्चे नंबरवार हैं ना! उन नंबरवार बच्चों को, उनमें भी जो पहले नंबर का बच्चा है, उसको सृष्टि रूपी नई रचना की सारी ज़िम्मेवारी सौंपता है या नहीं सौंपता? सौंप देता है। यहाँ भी ऐसे ही है, बेहद की ब्राह्मणों की दुनियाँ में भी शिवबाप उस परंब्रह्म रूपी आत्मा को (अखूट ज्ञान-भंडार की) सारी प्रॉपर्टी जब सौंप देते हैं और वो प्रैक्टिकल जीवन में ग्रास्प भी करता है। युक्ति तो दे देते हैं, ज्ञान तो दे देते हैं; लेकिन उस युक्ति को प्रैक्टिकल में धारण भी तो करना है। तो धारण करने में टाइम लगेगा या नहीं लगेगा? (किसी ने कहा- लगेगा) हथेली पर आम तो नहीं जमाया जाता। 63 जन्मों की आदत है देह का सुख भोगने की, कर्मेन्द्रियों का सुख भोगने की; इसलिए टाइम दिया जाता है, शूटिंग पीरियड में टाइम नूँधा हुआ है। क्या टाइम नूँधा हुआ है? श्रीमत के ऊपर चलेंगे तो ऊँचे चढ़ेंगे और मनमत पर या मनुष्यमत पर चलेंगे तो क्या होगा? नीचे गिरेंगे। ये (संगमयुग में) ऊपर चढ़ने की और नीचे गिरने की शूटिंग होती रहती है। उस शूटिंग पीरियड में जो आत्मा पहले-2, जो मनुष्य-सृष्टि के (बीजरूप) बाप का पहला पत्ता (कृष्ण) पूरी पढ़ाई पढ़ने के बाद, पूरी जानकारी लेने के बाद, पूरी युक्ति जानने के बाद सबसे तीखा जाता है, उस पहले पत्ते को (जगत्पिता) बाप सारी राजाई, सारी प्रॉपर्टी दे देता है। इसलिए कृष्ण के लिए कहा जाता है, ये भी कहते हैं कि नारायण का राज्य सतयुग में था, फिर ये भी कहते हैं- 'हे कृष्ण नारायण वासुदेव'। जो कृष्ण है वही नारायण है; लेकिन भक्त ये नहीं जानते वो कौन-सा नारायण है? नर से प्रिंस बनने वाला नारायण है, बाद में नारायण बनेगा या उसी जीवन में नर से नारायण बनने वाला है? ये राज़ बाप बताते हैं कि वो युक्ति कौन-सी है जो युक्ति आत्माओं का बाप बताते हैं। क्या युक्ति? अपन को आत्मा समझ मुझ प्रैक्टिकल कर्म करने वाले बाप को पहचानो (और याद करो)।

त्रिमूर्ति उसका कर्तव्य है ना! काम करता है कि नहीं? नई दुनियाँ की राजधानी की स्थापना भी करता है, उस राजधानी के फाउंडेशन डालने के समय, उस फाउंडेशन की पालना भी करता है। अभी फाउंडेशन पड़ रहा है या नहीं पड़ रहा है? पालना भी करता है। फिर जो फाउंडेशन डाला है, उसमें जो भ्रष्ट पार्ट बजाने वाले हैं, उनका विनाश भी करेगा या नहीं करेगा? जो श्रीमत पर श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ को पहचानने के बावजूद भी, स्टाम्प पेपर पर निश्चय-पत्र लिखने के बावजूद भी अपनी मत पर या मनुष्यों की मत पर या देहधारी गुरुओं की (सुनी-सुनाई बातों की) मत पर चलते हैं या चलने के लिए मजबूर हो जाते हैं, उनका विनाश करेगा या नहीं करेगा? (किसी ने कहा- करेगा) तो श्रेष्ठ आत्माएँ जो शिव की अष्टमूर्तियाँ कही जाती हैं, (शंकर के) सर के ऊपर रखे हुए आठ (आत्माओं रूपी) दाने दिखाए जाते हैं, उन मूर्तियों को सम्पूर्ण नई राजधानी 100 परसेण्ट तैयार करने के लिए निमित्त बनाता है। उस राजधानी का, पहली-2 सतोप्रधान सात्विक दुनियाँ का वो खुद प्रैक्टिकल में मालिक नहीं बनता, उस नई दुनियाँ की आठों दिशाओं को पालन करने वाले दिक्पाल-चार दिशाएँ और चार कोण-जहाँ दुनियाँ के अन्य-2 धर्मखण्ड बने हुए हैं, उनकी पालना का भार उनके ऊपर सौंपता है। खुद ज़िम्मेवारी उठाता है? खुद नहीं उठाता। जो ज़िम्मेवारी उठाता है, वो राजाई भी लेता है; (ईश्वरीय सेवा की) ज़िम्मेवारी नहीं उठाने वाले को राजाई नहीं मिलती। इसलिए वो तो अंत तक विषपायी है। वो पवित्रता की ज़िम्मेवारी नहीं उठाता। अव्वल नंबर में कौन उठाता है- पुरुष उठाते हैं या माताएँ-कन्याएँ उठाती हैं? माताएँ-

कन्याएँ उठाती हैं। तो यहाँ भी माताओं-कन्याओं में भी सर्वोपरि ज़िम्मेवारी उठाने वाली कोई माताएँ-कन्याएँ होंगी या नहीं होंगी? (किसी ने कहा- होंगी) कौन-2 हैं? त्रिदेवों की तीन देवियाँ। ज़िम्मेवारी उठाती हैं या नहीं उठातीं? उठाती हैं। फिर उनसे भी ऊँच कोई है या नहीं है? (किसी ने कहा- है) कौन? (किसी ने कहा- योगिनी माँ) हाँ! काशी नगरी। जो भगवान को बहुत प्यारी (काशी नगरी) दिखाई गई है। क्यों? क्योंकि नई दुनियाँ का जो संगठन ब्राह्मणों की दुनियाँ में तैयार होता है, उसका फाउंडेशन काशी नगरी के द्वारा पड़ता है, जो काश्य को धारण करती है। 'काश्य' माने योग की पावर। क्या नाम दिया बाबा ने? योगिनी। तो अव्वल नंबर तो वो हो गई; परंतु वो योगिनी रुद्रमाला का मणका है या विजयमाला का मणका है? रुद्रमाला का मणका है। जन्म-जन्मांतर के जो स्वभाव-संस्कार हैं, वो पुरुष-वृत्ति के हैं, राजाओं के हैं या रानी के हैं? राजाओं के संस्कार हैं। और राजाएँ कलियुग के अंत में आ करके, खास कर भारत के राजाएँ, पतित-व्यभिचारी बनते हैं या नहीं बनते हैं? बन जाते हैं। नंबरवार की बात है। तो रुद्रमाला में सब आत्माएँ स्वभाव-संस्कार से दुर्योधन-दुःशासन हैं। इसलिए विजयमाला में उसका नंबर नहीं आता। किसका नंबर आता है? पार्वती कहो या लक्ष्मी/राधा कहो, उसका नंबर आता है। विजय का टीका लगाने के निमित्त बनती है। युद्ध में बाहर जाते समय पुरुषों को विजय का टीका कन्याएँ-माताएँ लगाती हैं या माताओं को पुरुष लगाते हैं? कन्याएँ-माताएँ विजय का टीका लगाती हैं। इसलिए आज भी दुनियाँ में कहीं-ना-कहीं पुरुष ऐसे देखे जा रहे हैं, जो (माताओं से) विजय का टीका लगाते हैं। किसी ने देखा या न देखा? (किसी ने कहा- देखा) और माताएँ? आत्मिक स्मृति की बिंदी लगाती हैं; क्योंकि जिनमें आत्मिक स्मृति पक्की नहीं (रही) होगी, देहभान होगा, तो वो जौहर करेंगी? जीते जी अपनी देह को योग की अग्नि में झोंक देंगी? (किसी ने कहा- नहीं) परंतु जो संगमयुग में बिंदी बनती हैं, देहभान को त्याग देती हैं, वो बिंदी बन जाती हैं और योगाग्नि के कुण्ड में अपने देहभान को पूरा राख बना देती हैं। संगमयुग की बेहद की बातें हैं और दुनियाँ की बातें हद की हैं। भक्तों ने स्थूल रूपों में बातें उठाई हैं। तो देखो, नारायण कौन आत्मा बनती? जो जैसा नाम वैसा काम करके दिखाती है। कैसा नाम? नार+अयन= 'नार' माने ज्ञान-जल, 'अयन' माने घर। जो सारा जीवन कहाँ रहती है? ज्ञान-जल में रहती है। ज्ञान-जल ये कहता है- इस शरीर के रहते-2 संगमयुग में तुम ब्राह्मणों को सेवाधारी बन करके रहना है या राजा बनकर कण्ट्रोलर बनना है? सेवाधारी बनकर रहना है। तो वो आत्मा जिसको फ़कीर के रूप में दिखाया जाता है, किसको? शंकर को। वो आत्मा विश्व का (बेताज) बादशाह गाई जाती है; लेकिन स्वयं बनती नहीं है। बनती है प्रैक्टिकल में? दूसरों को बनाती है, खुद नहीं बनती है।

तो बोला कि बाप उस पार्टधारी को अच्छी तरह से समझाते हैं। सबको यही कहो कि उस बाप का वर्सा जो जीवन्मुक्ति है, वो सब एक-जैसी नहीं ले सकते। 84 जन्मों की सुख-शांति की दुनियाँ में सभी आत्माएँ नहीं रह सकतीं। जो मुरली में बोला है- कुछ बच्चे तो ऐसे भी हैं जो 82-83 जन्म भी सुख में रहते हैं। ''बाप समझाते हैं 3/4 से भी जास्ती तुम सुख भोगते हो।'' (मु.ता.3.6.69 पृ.2 मध्य) सिर्फ 84वाँ जन्म ऐसा है, जब बाप आते हैं। तो नियम है- जो नीचे-ते-नीचा गिरता है, उसी को बाप ऊँचे-ते-ऊँचा उठाते हैं। बाकी ऐसे नहीं है कि संगमयुग में नीचे गिरना है। अरे! जितना नीचे गिरना था 84 जन्मों में, गिर चुका। वो 84 जन्म का आदि मनुष्य-सृष्टि के बाप के लिए कब था? अरे! संगमयुग (के आदि सन् 1936-37) में था या नहीं था? वर्तमान में कौन-सा जन्म है- 84वाँ एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी जन्म। इससे पहले का जो जन्म था, वो 84वाँ जन्म था। उस जन्म में धोबीघाट का पार्ट समझ में आ गया, पूरा ज्ञान समझ में नहीं आया। तो वो धोबीघाट का, शरीर रूपी कपड़े धोने का पार्ट बजाया। ज्ञान तो पूरा था ही नहीं तो विजय मिलेगी? नहीं विजय मिल सकती। फेल हो गया। भल फेल हो गया, सारी दुनियाँ एक तरफ़ और वो आत्मा मृत्युपर्यंत एक तरफ अपने पार्ट पर डटी रही; लेकिन किसी के सामने झुकी? नहीं झुकी। जो गाया जाता है- ''देहं वा पातयामि कार्यं वा साधयामि।'' इस शरीर से वो काम पूरा नहीं करूँगा तो आगे वो शरीर मिलना है या नहीं मिलना है? ब्राह्मण जन्म में जो ज्ञान लिया है, वो कभी नष्ट तो होता ही नहीं, अगले जन्म में वो प्रारब्ध जाती है और वो ही आत्मा दुबारा जन्म ले करके इस सृष्टि पर आती है। जिसके लिए बाप मुरली में ब्रह्मा द्वारा घोषणा करते हैं कि मनुष्य-सृष्टि का वो बीज-रूप

जो नर से डायरैक्ट नारायण बनता है, उसका जन्म कब है? ''इन ल०ना० का जन्म कब हुआ। आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ।'' (सन् 66 की वाणी है) (रिवाइज़ मु०ता०4.3.70 पृ०3 मध्य) माना 1976 आता है। 1976 में वो राम वाली आत्मा, जैसे कृष्ण की आत्मा ब्रह्मा का पार्ट बजाती है, वैसे ही राम (या ना.) वाली आत्मा बच्चा-बुद्धि कृष्ण के बाप का पार्ट बजाती है और संसार में, खासकर ब्राह्मणों की दुनियाँ में नंबरवार (ब्राह्मणों को) प्रत्यक्ष होती है। ये राम की आत्मा है, ये मनुष्य-सृष्टि का बीज है- प्रत्यक्ष होती है? (आत्मा की) प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेती है या नहीं लेती है? (किसी ने कहा- लेती है) यदि नहीं लेती का मतलब सब इस बात में अनिश्चय-बुद्धि हैं, निश्चय-अनिश्चय के चक्र में डोल रहे हैं। जिनको यही पता नहीं है कि सन् 1976 के लिए नई दुनियाँ की स्थापना और पुरानी दुनियाँ के विनाश की बात कही थी। जहाँ पार्ट प्रत्यक्ष हो जाता है। जहाँ के लिए बोला- 10 साल के बाद टू-लेट का बोर्ड लग जावेगा। वो एक पेयर, एक युगलमूर्त आत्मा प्रत्यक्ष होगी, प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेगी, तो क्या रिज़ल्ट होगा? टू-लेट का बोर्ड। जो मनुष्य जीवन का लक्ष्य था- नर से अव्वल नंबर का नारायण बनना, उसमें टू-लेट हो गए। ये पहली प्रत्यक्षता होती है। उस पहली प्रत्यक्षता में अभी तक भी ढेर-के-ढेर हैं, जिनको ये संशय पैदा होता है कि ये सम्पन्न पार्ट है, भगवान का पार्ट है, सद्गुरू का पार्ट है, सुप्रीम मानवीय टीचर का पार्ट है, मनुष्य-सृष्टि के बाप का पार्ट है या नहीं? बहुत-से तो यही समझ बैठते हैं कि यही भगवान है। अरे! बच्चा पैदा होता है तो बच्चा-बुद्धि होता है या सालिम-बुद्धि कहा जाता है? (किसी ने कहा- बच्चा-बुद्धि) तो बच्चा-बुद्धि की बुद्धि में सारी पढ़ाई बैठ जाती है कि टाइम लगता है? टाइम लगता है।

तो बताया, तुम बच्चों को, रुद्रमाला के मणकों को, रुद्र वत्सों को, सारी सृष्टि की बीज-रूप आत्माओं को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40 से 50 वर्ष का समय लगता है। ''तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40-50 वर्ष लगते हैं।'' (मु.ता. 6.10.74 पृ.2 अंत) तो बताओ, सन् 1976 में जन्म भले होता है, प्रत्यक्षता भले हो जाती है; लेकिन वो आत्मा सम्पन्न नहीं होती; क्योंकि पढ़ाई पूरी नहीं होती। 40 वर्ष जब पूरे हों तो पहली आत्मा मनुष्य-सृष्टि की बीज-रूप आत्माओं में से निकलेगी, जो सम्पन्न बनेगी। और बाबा ने ये भी बोला- बाप अकेला प्रत्यक्ष होता है क्या? अकेला जन्म लेता है? बाप बच्चे के साथ प्रत्यक्ष होता है। तो कौन-सा पहला बच्चा है जिसकी बुद्धि में ये बात फिक्स बैठ जाती है कि गीता का भगवान मैं नहीं हूँ; गीता का भगवान शिव-शंकर भोलेनाथ ही है? जब बुद्धि में बाप का निश्चय पक्का बैठेगा, तब पढ़ाई शुरू होगी या पहले से ही पढ़ाई को मानता है? (किसी ने कहा- नहीं मानता) नहीं मानता ना! तो 40 वर्ष जब पूरे होते हैं तो बाप और बच्चे का (वास्तविक प्रत्यक्षता रूपी) जन्म इकट्ठा है। तब तक किसी के अंदर 100 परसेण्ट पक्की प्रत्यक्षता नहीं कहेंगे। इसलिए निश्चय और अनिश्चय का चक्र चलता है या नहीं चलता है? चलता है। कोई के अंदर न चलता हो तो हाथ उठाओ। कोई नहीं? सबको अनिश्चय-बुद्धि की मौत मरना है क्या? आज नहीं तो कल, अनिश्चय-बुद्धि की मौत मरना पड़ेगा। निश्चय-बुद्धि माने जन्म, शिवबाप का (आत्मा रूपी) बच्चा बना। वो तो बनना ही है। नंबरवार बने तो हैं; लेकिन कोई तो बच्चा बनकर भी, बाप के घर में जाकर जन्म लेकर भी; घर में जाकर जन्म लेते हैं कि नहीं? (किसी ने कहा- लेते हैं) बुद्धि रूपी पेट की भट्ठी में पलते हैं या नहीं पलते हैं? (किसी ने कहा- पलते हैं) उस गर्भ में पलते हुए बाहर का खाना, दाना, पानी लेते हैं या नहीं लेते? नहीं लेते। जो (संगदोष-अन्नदोष) लेते हैं या बाहर निकल जाते हैं वो गर्भपात हो गया, भट्ठी में ही मर गया। दुनियाँ में भी पेट के अंदर बच्चे मरते हैं या नहीं मरते? (किसी ने कहा- मरते हैं) ऐसे ही यहाँ भी होता है। चलो, खुदा-ना-खासता जन्म भी ले लिया, तो ऐसे लुंजुम-पुंजुम प्रभावित आत्माएँ पैदा होते हैं जो अभी-2 भट्ठी की और रास्ते में दो-चार लोग ऐसे मिल गए- अरे! तुम कहाँ गए थे, वहाँ तो ऐसा, वैसा, ऐसा होता है। बस! अनिश्चय (किसी ने कहा- या होना शुरू हो गया।) इसलिए बाप कहते हैं- ''एक से ज्ञान सुनना चाहिए।'' (मु.ता. 12.1.74 पृ.2 आदि) औरों की बातें एक कान से सुनो, फालतू बातें बुद्धि में से निकाल दो, सुनते हुए नहीं सुनो- हियर नो ईविल। जैसा हमने धारण किया है और पहचाना है, उस बात पर डटे रहना चाहिए। लेकिन क्या होता है? भारतवासियों की

खास बात क्या है? ''सुनी-सुनाई बातों से भारतवासियों ने दुर्गति पाई है।'' ''सुनी-सुनाई बातों पर ही भारतवासियों ने दुर्गति को पाया है।'' (मु.ता.30.1.71 पृ.4 आदि) हाँ! ये बात दूसरी है, द्वापरयुग से इस्लाम धर्म का बाप आता है, उसके फॉलोअर्स आते हैं, कोई उनकी बातें सुनते ही कन्वर्ट हो जाते हैं, प्रभावित हो जाते हैं, उनकी प्रजा बन गए; 250 वर्ष के बाद महात्मा बुद्ध आते हैं, उनके फॉलोअर्स आते हैं, कोई उनकी बातें सुनते हैं, सुनकर प्रभावित हो जाते हैं। प्रभावित माने प्रजा। ऐसे ही कोई द्वापर के अंत में आने वाले धर्मपिताओं से या उनके फॉलोअर्स से प्रभावित हो जाते हैं, कोई कलियुग के आदि में आने वाले धर्मपिताओं से प्रभावित हो जाते हैं, कोई मध्य में आने वाले गुरूनानक से प्रभावित हो जाते हैं माना हरेक का अपना-2 टाइम नूँधा हुआ है। कोई पहले ही दूसरों की बातों से प्रभावित हो जाते हैं, अनिश्चय-बुद्धि बनने लगते हैं और कोई ऐसे भी होंगे जो सब अनिश्चय-बुद्धि बनने लग पड़ेंगे, तो भी बाप का साथ निभाएँगे; कोई से प्रभावित नहीं होंगे। (संगमयुगी शूटिंगकाल में) ऐसे सिर्फ 8 ही निकलेंगे; लेकिन माया ठगनी ऐसी है जो उन आठ को भी नहीं छोड़ती, उनकी भी (नं. वार कुछ-न-कुछ बलि ले ही) लेती है।

तो देखो, इससे क्या साबित होता है? अनिश्चय-बुद्धि बनने वाले इस वर्तमान काल में सारे ही ब्राह्मण मृत्युलोक में हैं या अमरलोक में हैं? मृत्युलोक में हैं। अभी क्या करना है? सबको काल कलवित होना है, काल के गाल में जाना है। फिर करना क्या है? (किसी ने कुछ कहा-...) अरे! लम्बी आयु भोगना है या कम आयु में ही शरीर छोड़ देना है? लम्बी आयु भोगना है। जैसे अष्टदेव हैं, सबसे लास्ट में जाकर माया के गाल में जाएँगे। तो वो ही विजयी होते हैं। पावरफुल आत्माएँ हुईं ना! औरों की बातों के चक्कर में प्रभावित होने वाली उनकी प्रजा भी तो नहीं हैं ना!

यहाँ भी बताया, उस एक बाप का परिचय दो जो किसी के प्रभाव में प्रभावित होकर कभी उनकी प्रजा नहीं बनता है। यहाँ संगमयुग में प्रजा नहीं बनेगा, 'प्र' माने प्रकृष्ट रूपेण, 'जा' माने जायते, जन्म लेने वाला। ऐसी प्रभावित होने वाली आत्मा अगर कोई यहाँ संगमयुग में नहीं बनेगी तो ब्रॉड ड्रामा में बनेगी? नहीं बनेगी। इसलिए इतने-2 आततायी, विधर्मी, विदेशी, आक्रांताएँ भारतवर्ष में आए और भारत में आकर पूँछ दबाकर भाग खड़े हुए। प्रभावित किया या भागने वाले प्रभावित हो गए? प्रभावित हो गए, उस एकमात्र विश्वपिता की प्रजा बन गए। वो उसके ऊपर जीत किसी भी जन्म में पाय नहीं सकते। वो है ही हीरो पार्टधारी। कभी साहित्यकार के रूप में हीरो है- व्यास, वाल्मीक, तुलसीदास बनकर हीरो है और कभी? (किसी ने कहा- कबीरदास) ना, वो कबीरदास तो साहित्यकार ही हुआ ना! और कभी योद्धा बनकर हीरो है। 2500 वर्ष की हिस्ट्री में जो हिंसक युद्ध हुए हैं ना, उन हिंसक युद्धों में कभी उसने हार नहीं खाई।

तो नाना रूपों में वो जन्म-जन्मांतर हीरो पार्ट ही बजाता आया है। उस (शिवलिंग स्वरूप बने) बाप का परिचय देते रहो। जिनको सर्वव्यापी का ज्ञान है, बस! और कोई ज्ञान नहीं। जिनके मुख में देखो कौन-सा ज्ञान निकलता है? पूछो, भगवान क्या है, कहाँ है? कहेंगे सर्वव्यापी है। मुख से क्या निकलेगा? सर्वव्यापी है। वो कितने भी बैठकर डिबेट करेंगे, वार्तालाप करेंगे, वाद-विवाद करेंगे; क्योंकि हिस्ट्री में वो बहुत लम्बे समय से ऐसा करते आए हैं। इसलिए ऋग्वेद की एक ऋचा में लिखा हुआ है, अंतिम ऋचाएँ हैं जो बाद में जोड़ी गई हैं, उस ऋचा में लिखा हुआ है कि ''हे ईश्वर! हम पहले तुम्हें सर्वव्यापी नहीं मानते थे और अब सर्वव्यापी मानते हैं।'' ये द्वापरयुग की बात है। इसलिए बोला कि बहुत समय से ऐसे कहते आए हैं। तो वो सब पत्थरबुद्धि हैं ना! किसलिए पत्थरबुद्धि हैं? कि सुप्रीम गॉडफादर भी कहते हैं, परमपिता भी कहते हैं, ऊँचे-ते-ऊँचा बाप। दुनियाँ में जितने भी जिस धर्म के भी मनुष्यमात्र हैं, अलग-2 धर्मों के अलग-2 बाप, ग्रेट फादर्स कहे जाते हैं- इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट आदि, उन ग्रेट फादर्स का भी ग्रेट-2 ग्राण्ड फादर। कौन? (किसी ने कहा- प्रजापिता) ग्राण्ड फादर शिव तो बनता नहीं, वो सिर्फ आत्माओं का बाप है। वो जिसमें प्रवेश करता है, वो ही हुआ इस मनुष्य-सृष्टि में सभी धर्मपिताओं का बाप, बापों का भी बाप, ग्रेट-2 ग्राण्ड फादर। उस फादर को कोई समझते ही नहीं हैं, जिसमें भगवान (मुकर्रर रूप से) एकव्यापी बनकर आता है। पत्थर बुद्धि हैं ना बच्चे! तो पहले-2 यही एक बात।

देखो, एक ये भी है बच्ची अभी। किसी बच्ची की तरफ़ इशारा किया। अभी वहाँ प्रेयर करेगी। कहेगी- वहाँ क्राइस्ट का चित्र क्यों रखा हुआ है? वो सुप्रीम गॉडफादर है क्या? (किसी ने कहा- नहीं) ग्रेट-2 ग्राण्ड फादर है क्या? (किसी ने कहा- नहीं) हैविनली गॉडफादर है क्या? (किसी ने कहा- नहीं) हैविनली गॉडफादर क्यों कहा जाता है? ज़रूर हैविन की रचना की होगी ना! हैविन की रचना करने वाला कौन-सा वर्सा देगा? हैविन का वर्सा देगा। तो यहाँ ये क्राइस्ट को क्यों रखा हुआ है? ये स्वर्ग में गया या जन्म-जन्मांतर नर्क में ही गोते खा रहा है? (किसी ने कहा-नर्क में) तो उनको कहना चाहिए; किनको? ये तो ठीक है कि क्रिश्चियन्स जितने भी इस दुनियाँ में हैं, सब क्राइस्ट को फादर मानते हैं; पर क्राइस्ट से भी तो कोई ऊँचा बाप है ना! बापों का भी कोई बाप है ना! नहीं है? अगर नहीं है तो बाइबिल में हैविनली गॉडफादर क्यों लिखते हो? तो जो हैविनली गॉडफादर है, वो फादर है ना! (बेहद हैविन का) वर्सा किससे मिलता है? (बेहद के) फादर से वर्सा मिलता है। वो हैविन का फादर हैविन बनाने वाला। नाम हैविन क्यों रखा? है। क्या है? विन। सारी दुनियाँ के ऊपर जीत पाने वाला है। उसके मुकाबले सारी दुनियाँ पुरुषार्थ में हार जाती है। इसलिए कहा- ''शंकर चाप जहाज, जेही चढ़ि उतरैं पार नर, बूढ़ि सकल संसार।'' गुरूनानक ने अपने लिए कह दिया या उनके भक्तों ने कह दिया हो- ''नानक चाप जहाज।'' इस संसार सागर में ऐसी शरीर रूपी नइया या जहाज है, जिसकी याद में बैठ करके, जिसकी याद में चढ़ करके सारा संसार पार उतरा जाता है। नहीं तो क्या होता है? डूब जाते हैं। वो फादर है ना! फादर से क्या मिलता है? (किसी ने कहा- वर्सा मिलता है)

तो वो (बेहद सारी 5/700 करोड़ मनुष्य-सृष्टि का) फादर कौन है? वो धर्मपिताएँ तो निराकार को मानते हैं, उसके अलावा सुप्रीम फादर किसको मानते ही नहीं। वो निराकार से निराकारी वर्सा मिलेगा, ज्ञान का वर्सा मिलेगा या साकार हैविन का वर्सा मिलेगा? बाप कौन-सा वर्सा देगा? धनवान होगा, करोड़पति, अरबपति बाप होगा तो काहे का वर्सा देगा? अरब/खरब/करोड़ का वर्सा देगा। जमींदार बाप होगा तो काहे का वर्सा देगा? जमीन-जायदाद का वर्सा देगा। शिवबाप के पास कौन-सा भंडार है? (सभी ने कहा- {अखूट} ज्ञान का) तो ज्ञान का ही वर्सा देगा ना! निराकार आत्माओं का निराकार बाप निराकारी ज्ञान का वर्सा देता है और साकार मनुष्य-सृष्टि का साकार बाप इस साकार सृष्टि पर स्वर्ग का (अद्वैत साकार) वर्सा देता है; और फिर जो उसको नहीं पहचान पाते, उनको (द्वैतवादी दैत्यों के) नर्क में आना पड़ता है या स्वर्ग में आते हैं? (सभी ने कहा- नर्क में आते हैं) वो फादर, सबका (बेहद का) फादर है। जिनको स्वर्ग का वर्सा मिलता है या स्वर्ग का वर्सा नहीं मिलता है, उनका भी फादर है। ये क्राइस्ट सबका फादर तो नहीं है ना! ज़्यादा-से-ज़्यादा 200-250 करोड़ मनुष्य ही क्राइस्ट को अपना फादर मानते हैं। 500-700 करोड़ तो नहीं मानते? (सभी ने कहा- नहीं मानते) तो वो सबका फादर तो नहीं है; सबका फादर तो सुप्रीम गॉडफादर है। वो तो इन्कॉरपोरियल है और हम आत्माएँ भी इन्कॉरपोरियल हैं। तो हम सभी इन्कॉरपोरियल आत्माओं का वो फादर है, जिसको ही आत्माएँ पुकारती हैं। क्या पुकारती है? ''ओ गॉडफादर!'' पुकारती हैं ना! तो फादर वो है ना! लेकिन निराकारी आत्माओं का फादर है, निराकार वर्सा देता है या साकार वर्सा देता है? (किसी ने कहा- निराकार वर्सा देता है) क्राइस्ट को बाइबिल में बोला है कि क्राइस्ट तो उसका सन है, निराकार का सन है। कहते हैं ना! तो जबकि क्राइस्ट सन है, तो सन से फिर सभी सन्स को कैसे वर्सा मिलेगा? (सुप्रीम) फादर के बच्चे (क्राइस्ट) से वर्सा मिलता है या फादर से वर्सा मिलता है? (किसी ने कहा-सुप्रीम फादर से) तो क्राइस्ट को फॉलो करने वालों को पूछो, जो क्राइस्ट को अपना बाप मानते हैं। तो जो क्राइस्ट है, वो कहता है, उसके लिए कहा गया है कि वो गॉडफादर का बच्चा है। तो जो खुद बच्चा है, वो वर्सा देता है या (सुप्रीम) फादर वर्सा देता है? (सभी ने कहा-सुप्रीम फादर) तो जैसे क्राइस्ट से पहले बुद्ध, उनके फॉलोअर्स; इब्राहीम, उनके फॉलोअर्स- वो भी तो बच्चे हुए ना! क्राइस्ट से पहले आए ना! पहले आए। वो तो क्राइस्ट हो गया। तो जो पीछे आने वाले हैं, चाहे पहले आने वाले हैं, सब जो धर्म (स्थापना) वाले (ग्रेट फादर्स) हैं, वो सभी तो बच्चे हैं ना! कि क्राइस्ट अकेला बच्चा है? (किसी ने कहा-सभी तो बच्चे हैं) फिर सभी सन्स ही हैं, हम भी क्राइस्ट के लिए कहते हैं कि वो भी सन है। कहते हैं- अच्छा!

अच्छा, हम भी सन्स हैं क्राइस्ट के; परन्तु गॉडफादर के तो (बेहद के) बच्चे हैं ना! ऐसे लिखा नहीं है बाइबिल में। कैसे? कि क्राइस्ट को याद करने से हैविन का वर्सा मिलेगा। लिखा है? (सभी ने कहा- नहीं) वो आत्मा तमोप्रधान बन गई है। वो ज़रूर है कि सतोप्रधान बन जाएगी। बाइबिल में ऐसे भी नहीं लिखा है। कोई भी शास्त्र में ऐसा लिखा ही नहीं है, सिवाय इस श्रीमद्भगवद्गीता के कि मुझे याद करने से स्वर्ग का वर्सा मिलेगा, मुक्ति और जीवन्मुक्ति का वर्सा मिलेगा, जीवन में रहते हुए भी दुख-दर्दों से मुक्ति मिल जाएगी।

तो गीता के भगवान जो कहते हैं और आ करके कहते हैं। अगर सर्वव्यापी होता तो आने की दरकार है? अरे! अगर सर्वव्यापी होता तो (अर्जुन के शरीर रूपी रथ में) आने की दरकार ही नहीं। वो आकर कहते हैं ना! तो उन्हीं के ही शास्त्रों में होगा ना। भगवान का शास्त्र कौन-सा है? दुनिया में एक ही शास्त्र है जिसमें लिखा हुआ है- श्रीमद्भगवद्गीता। भगवान का गाया हुआ गीत। और दुनिया के किसी भी शास्त्र में नहीं लिखा है कि भगवान के द्वारा गाया हुआ है। (05.11.66 की वाणी का सातवाँ पेज)- तो उनका शास्त्र तो है ही गीता। क्या नाम दिया? शास्त्र। 'शास' माना शासन करना। शास्त्र माना शासन करने का विधान। राजा क्या करता है? शासन करता है। तो राजा वो ही बन सकता है इस दुनिया में जो भगवान के द्वारा बनाए हुए शास्त्र/विधान; संविधान कहो- सम्पूर्ण विधान; क्योंकि ईश्वर के द्वारा बनाया जाता है। उनका शास्त्र जो गीता है, दुनिया में और कोई भी शास्त्र नहीं हैं जो शासन करना सिखाए, राजा बनाना सिखाए। और तो जो भी धर्मपिताएँ और उनके फॉलोअर्स गुरू बनकर बैठते हैं, सब आधीन बनाते हैं। भल आज भारत में समझते हैं- अंग्रेज़ों ने हमको स्वाधीन बना दिया, स्वाधीन बनाकर भारत की सारी सत्ता हमारे हाथों में दे दी। क्या ऐसा हुआ? हम भारतवासी अभी भी इस दुनिया में स्वाधीन हैं या विदेशों के आधीन हैं? (किसी ने कहा-विदेशों के आधीन हैं) तो (बेहद के) बाप का नाम निकाल कर कृष्ण का; बाइबल में क्राइस्ट के बाप का नाम निकाल कर उन्होंने क्या किया? हैविन का लॉर्ड किसको बताया? कृष्ण को बनाए दिया। मनुष्यों के द्वारा बनाए हुए शास्त्रों में मनुष्य (कृष्ण/ब्रह्मा) का नाम डाल देने से फिर देखो भक्तिमार्ग में यही सब-कुछ बातें झूठी हो गईं।

इस दुनिया का कोई भी धर्म वाला हो, धर्मपिता हो, मुसलमान हो, उनको भी सिर्फ ये कहो- ऊँचे-ते-ऊँचा है अल्लाह, ऊँच-ते-ऊँचा भगवंत। इस दुनिया में ऊँचा तेरा काम है, इसलिए ऊँचा तेरा नाम, ऊँचा तेरा धाम है। कौन-सा धाम? परमधाम। जिसके लिए ब्रह्मा मुख से आत्माओं का बाप, शिव भगवान कहते हैं कि उस परमधाम/आत्मलोक को तुम बच्चे नीचे उतार लेते हो। ''थोड़े ही दिन इस दुनिया में हो, फिर तुम बच्चों को यह स्थूलवतन भासेगा ही नहीं, सूक्ष्मवतन और मूलवतन ही भासेगा।'' (मु०ता० 6.3.70 पृ०2 मध्यांत) तो कहाँ की बात है? नीचे माने कहाँ? (किसी ने कहा- माउण्ट आबू...) माउण्ट आबू? (संगमयुग?) संगम तो समय का नाम है। नीचे उतार लेते हो। (किसी ने कहा- साकार परमधाम) हाँ! कोई नीच-ते-नीच पार्ट बजाने वाला साकार मनुष्य है। विषपायी दिखाते हैं। जन्म-जन्मांतर की जो पराई स्त्रियाँ हैं; 16 हज़ार एक की स्त्रियाँ हैं? 16 हज़ार जो गोपियाँ दिखाई जाती हैं शास्त्रों में, हैं भगवान की गोपिकाएँ, भगवान के साथ इन्द्रियों का गुप्त सम्बंध जोड़ने वालीं, वो स्त्रियाँ जन्म-जन्मांतर एक भगवान की बनकर रहती हैं? नहीं रहतीं। वो और-2 जन्मों में कोई और की स्त्रियाँ हैं। जो पराई हैं, अनेक जन्मों की पराई हैं, उन स्त्रियों के साथ क्या करता है? इन्द्रियों का संग करता है। चाहे ज्ञानेन्द्रियाँ हों और चाहे कर्मेन्द्रियाँ हों। तो विषपायी हुआ, व्यभिचारी हुआ या नहीं हुआ? विषपायी हुआ। तो वो ऊँच-ते-ऊँच हुआ या नीच-ते-नीच कर्म करने वाला हुआ? अरे, चोर-डकैत हुआ या नहीं हुआ? गीत गाते रहते हैं- ''वैकुण्ठ करो गुजरात, कृष्ण भगवान। यही समझाना, भारत में अब मत आना। चुराके माखन खाओगे'', तो चोरी हुई ना! 'चोरी में जेल-2 में चक्की तुमको पड़े चलाना, भारत में अब मत आना।'' बढ़िया-2 गीत बनाए। सारी बातें भक्तों को कैसे मालूम पड़ गईं? झूठे गीत बनाए या सच्चे बनाए? (किसी ने कहा- सच्चे) तो नीच साबित तो किया ना! चोर तो साबित हुआ ना! तो जो चोर है, नीच-ते-नीच है, उसमें ऊँचे-ते-ऊँचा अल्लाह आते हैं, युक्ति बताते हैं कि तुम नीच-ते-नीच क्या कर्म करो जो ऊँच-ते-ऊँच बनकर तुम्हारी सारे संसार में पूजा हो, (सारे संसार

की खुदाइयों में शंकर की नग्न) मूर्तियाँ बने, मंदिर यादगार बने और तुम (पुरुषार्थ की) सबसे ऊँची स्टेज में चले जाओ। अल्लाह माने ऊँच-ते-ऊँचा। ऊँच-ते-ऊँचा और नीचे-ते-नीचा- आत्मलोक में होता है कि इस सृष्टि में होता है? (किसी ने कहा- इस सृष्टि में) तो वो ऊँच-ते-ऊँचा बाप है सबका, रचयिता है। कौन- (दाएँ-बाएँ ब्रह्मा और शंकर की तरफ इशारा करते हुए कहा) ये या वो? अरे! बेहद के दो बाप हैं ना! एक वो और एक वो। किसकी तरफ इशारा किया? वो सबका रचयिता है। रचयिता निराकार होता है या साकार होता है? (किसी ने कहा- साकार)

इस दुनिया में सबका रचयिता है। जो भी जड़-जंगम संसार है, जड़त्वमई बुद्धि वाले प्राणी हैं या चैतन्य बुद्धि वाले मनुष्य हैं, उन सबका बाप है। वो जड़-जंगम संसार कहाँ से जन्म लेता है? अरे, कोई से पूछो- तुम्हारा जन्म कहाँ से हुआ? किसने तुमको जन्म दिया? तो क्या कहेंगे? माँ ने हमें जन्म दिया। बच्चा-बुद्धि होगा तो यही जवाब देगा कि हमें किसने जन्म दिया? माँ ने जन्म दिया। जैसे ब्रह्माकुमारियाँ कहती हैं। क्या कहती हैं? हम अम्मा के बच्चे हैं, ब्रह्मा के बच्चे हैं। अरे, बप्पा का भी तो नाम बताओ। वो जानते ही नहीं तो कहाँ से बताएँ! तो बताया- वो सबका बाप है। जो बड़े बच्चे हो जाते हैं, वो जानते हैं कि माँ जन्म तो देती है, प्रैक्टिकल में जन्म देती है; लेकिन माँ के पेट में बीज=बच्चा देने वाला कोई और है या अपने-आप क्रियेट करती है? जन्मदाता कोई और है। वो ही बाप है। ऐसे यहाँ हद में है तो बेहद में भी है। एक रचयिता बाप की सारी सृष्टि रचना है। जिस रचयिता बाप से ही सृष्टि के आदि में सब निकलते हैं और सृष्टि के अंत में, महामृत्यु के समय सब उसी में समा जाते हैं। जिसमें समा जाते हैं, वो ही परमधाम है। जिसके लिए कहा- तुम बच्चे परमधाम को कहाँ उतार लेंगे? इस सृष्टि पर उतार लेंगे। जिसके लिए मुरली में बोला है और बच्चे संशय-बुद्धि हो पड़ते हैं। जो मुरली में बोला है- ‘‘अपने शांतिधाम घर को याद करो, सुखधाम को याद करो। .... सिर्फ एक बाप को याद करना है।’’ (मु.ता. 2.8.91 पृ.2 अंत) अब एक को याद करें या तीन-2 को याद करें? (किसी ने कहा- एक को याद करें) बोला तीन-2 को, फिर एक को कैसे याद करें? क्योंकि जिस मनुष्य तन में वो सुप्रीम सोल आता है, वो ही हमारा स्वर्ग है। वो मिल गया तो चाह थी पारब्रह्म परमेश्वर की, वो मिल गया तो और क्या चाहिए! इससे ऊँची प्राप्ति जीवन्मुक्ति की और कोई होती ही नहीं। जिनको वो मिल जाता है, उनको इसी जीवन में, संगमयुग में स्वर्ग से भी ऊँची (अतीन्द्रिय सुख की) प्राप्ति हो जाती है। इसलिए बोला कि वो ऊँचे-ते-ऊँचा अल्लाह है, जिसमें से सारी सृष्टि नम्बरवार निकलती है और महामृत्यु के समय सभी उसी के अंदर समा जाते हैं। जो साक्षात्कार में सृष्टि रूपी वृक्ष के ऊपर बैठा हुआ दिखाया गया है। कौन? शंकर। शंकर का सम्पन्न रूप, नग्न रूप या बिच्छू-टिण्डन वाला?- कौन-सा रूप? बिच्छू-टिण्डन में जकड़े हुए हैं? नहीं, निराकारी रूप। सबका ऊँचे-ते-ऊँचा बाप वो है। रचयिता है, सबको रचता है और वो ही सबको नं.वार जीवन्मुक्ति का वर्सा देता है। सर्वव्यापी बाप कैसे वर्सा देगा? बाप एक होगा तो बच्चों को वर्सा देगा या सर्वव्यापी बनकर वर्सा देगा? एकव्यापी बाप है; और वो ही सुख, जीवन्मुक्ति और शान्ति का वर्सा दे सकता है। ओम् शान्ति।